पुष्पेश कुमार पुष्प

जीवन का आधार हैं वृक्ष

वृक्षों का अपना विशिष्ट महत्व है। धार्मिक महत्व होने के साथ-साथ ये हमारे जीवन में काम आने वाली वस्तुओं के निर्माण के अलावा पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई ऐसे वृक्ष हैं जो अपनी खूबसूरती एवं सुगंध के लिए प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा इनकी लकड़ी से विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। अपनी खूबसूरती, शक्ति और सुगंध के लिए देवदार का वृक्ष प्रसिद्ध है। यह देवताओं का सर्व प्रिय वृक्ष है। देवदार के वृक्ष से प्राप्त लकड़ी का उपयोग मंदिरों, मकानों आदि के निर्माण में किया जाता है।

वृक्षों का हमारे जीवन से अटूट संबंध रहा है। सेवा, समर्पण, कर्तव्य और निस्वार्थ प्रेम की भावना वृक्षों के अलावा किसी और में हो ही नहीं सकती। छाया, आश्रय और शोभा देने में वृक्षों का महत्वपूर्ण योगदान है। यही नहीं वृक्ष हमारे वातावरण में फैली जहरीली हवा को स्वयं ग्रहण कर हमें संजीवनी देने के साथ-साथ पर्यावरण को स्वच्छ और संतुलित बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हमारे जीवन का आधार वृक्ष ही हैं। यही कारण है कि वृक्षों की पूजा हमारे समाज में प्राचीनकाल से होती आ रही है। प्राचीनकाल के ऋषि-मुनियों ने भी इसके गुणों की विस्तार से चर्चा की है। हमारे ग्रंथों में इसके औषधीय गुणों की भी चर्चा की गयी है। मोक्ष और ज्ञान प्राप्ति के लिए वृक्षों को ही सर्वोत्तम माना गया है।

प्रारंभ में मनुष्य वृक्षों को आश्चर्य भरी निगाहों से देखता था। उसका निरंतर बढ़ना, फिर पतझड़ में मृतप्राय हो जाना और बसंत में फिर नयी पत्तियों से सुशोभित हो जाना, यह सब मनुष्य के लिए एक अबूझ पहेली से कम नहीं था। फिर इस पहेली को हल करने के लिए अन्वेषण प्रारंभ हुए। इस पहेली के हल ने मनुष्यों को आश्चर्य में डाल दिया और इसकी उपयोगिता को प्रमाणित कर दिया। वृक्षों को नवजीवन प्रदाता कहा गया और हमारे लिए वृक्ष पूजनीय हो गए। मंदिर, ऐतिहासिक स्थल और घर के आसपास के स्थलों की शोभा बढ़ाने एवं वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए वृक्षारोपण की जो परंपरा शुरु हुई, वह आज भी जारी है।

वृक्षों को लेकर कई मान्यताएं भी प्रचलित हैं। ऐसी मान्यता है कि आम के वृक्ष लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं और इस वरदान का प्रभाव एक वर्ष तक ही रहता है। गुजरात की महिलाएं श्रावण सप्तमी को आम के वृक्ष का रोपण कर इसकी पूजा करती हैं और अपने बच्चों के स्वस्थ जीवन की कामना करती हैं। जनजातीय लोगों में साल के वृक्ष का पीपल के वृक्षों के समान ही महत्व है। एक मान्यता के अनुसार वर-वधू दोनों में किसी को विवाह करने की इच्छा नहीं है, तो वह इस वृक्ष के पत्ते को बीच से चीरकर विवाह के प्रति अपना विरोध व्यक्त करता है।

प्रारंभ में मनुष्य वस्त्र उत्पादन की तकनीक से परिचित नहीं था, तो अपने शरीर को ढकने के लिए वृक्ष की छालों का उपयोग करता था। प्राचीनकाल में कागज के स्थान पर ताड़ पत्रों पर लिखा जाता था। हिंदुओं और बौद्धों के कई धर्मग्रंथों की रचना इन्हीं पत्रों पर की गयी।

सम्राट अशोक ने अपने शासनकाल में सड़कों के किनारे एवं सार्वजनिक स्थलों पर सुंदर और छायादार वृक्षों को लगाने पर विशेष बल दिया था ताकि पर्यावरण का संतुलन बना रहे।

मध्य प्रदेश में विलुप्त औषधीय पौधों को किया जा रहा है संरक्षित।

हमारे जीवन का आधार वृक्ष ही हैं। यही कारण है कि वृक्षों की पूजा हमारे समाज में प्राचीनकाल से होती आ रही है। प्राचीनकाल के ऋषि-मुनियों ने भी इसके गुणों की विस्तार से चर्चा की है। हमारे ग्रंथों में इसके औषधीय गुणों की भी चर्चा की गयी है। मोक्ष और ज्ञान प्राप्ति के लिए वृक्षों को ही सर्वोत्तम माना गया है।

वृक्षों का अपना विशिष्ट महत्व है। धार्मिक महत्व होने के साथ-साथ ये हमारे जीवन में काम आने वाली वस्तुओं के निर्माण के अलावा पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई ऐसे वृक्ष हैं जो अपनी खूबसूरती एवं सुगंध के लिए प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा इनकी लकड़ी से विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। अपनी खूबसूरती, शक्ति और सुगंध के लिए देवदार का वृक्ष प्रसिद्ध है। यह देवताओं का सर्व प्रिय वृक्ष है। देवदार के वृक्ष से प्राप्त लकड़ी का उपयोग मंदिरों, मकानों आदि के निर्माण में किया जाता है।

शीशम की लकड़ी का उपयोग शिल्प कला में होता है। इसकी लकड़ी से वाद्य यंत्र भी बनाये जाते हैं। शीशम का वैज्ञानिक नाम है डलबेरजिया सिस्सू। बबूल की लकड़ी भी काफी मजबूत मानी जाती है। बबूल की लकड़ी का उपयोग कुंए की घिर्री, गन्ने का रस निकालने की चक्की, धान कूटने की ओखली व मूसल और हल आदि बनाने में किया जाता है। बबूल के वृक्ष की विशेषता यह है कि यह रेगिस्तान और दलदल में भी उत्पन्न हो जाता है। छायादार और खूबसूरती के मामले में अशोक के वृक्ष का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। अशोक के वृक्ष को अंग्रेजी में सराका इंडिका कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि अशोक का वृक्ष प्रेम के देवता कामदेव को समर्पित है। यह वृक्ष समृद्धि और उर्वरता का प्रतीक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध का जन्म इसी वृक्ष के नीचे हुआ था। बौद्ध धर्म के अनुयायिओं में इस वृक्ष के प्रति गहरी आस्था है। यह वृक्ष उनके लिए पूजनीय है।

कचनार के वृक्ष की गणना भी सौंदर्य और उपयोगी वृक्ष के रुप में की जाती हैं। महाकवि कालिदास ने अपने नाटकों में इस वृक्ष की चर्चा कोविदार के नाम से की है। कचनार की कई प्रजातियां पायी जाती हैं, लेकिन गुलाबी कचनार का ही विशेष महत्व है। इसकी छाल से रंग बनाये जाते हैं। इसके फूलों से स्वादिष्ट अचार एवं सब्जी बनायी जाती है। कृषि औजार बनाने में इसकी लकड़ी का उपयोग किया जाता है।

खूबसूरती के मामले में पलाश के फूलों का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। पलाश को अंग्रेजी में ''फ्लेम ऑफ फॉरेस्टर'' कहा जाता है। पलाश के फूलों से सिंदूरी लाल रंग बनाया जाता है। इससे बने रंगों से होली खेलने पर शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके पत्तों से खूबसूरत पत्तल और दोने बनाये जाते हैं। इतिहास प्रसिद्ध युद्ध ''प्लासी की लड़ाई'' का नामकरण इसी वृक्ष के नाम पर किया गया। महुआ जो जंगलों में बहुतयात में पाया जाता है यह भी काफी आकर्षक वृक्ष है। महुआ की विशेषता यह है कि इसके फूल सूर्यास्त के बाद खिलते हैं और सूर्योदय के पूर्व ही मुरझा जाते हैं। इसके पुष्पों से सारा वातावरण महक उठता है। वनवासियों के जीवन में इसका अपना विशिष्ट महत्व है। इसके पुष्पों में कई पौष्टिक तत्व पाये जाते हैं और इसे भोजन के रुप में भी उपयोग किया जाता है। वनवासी इसके पुष्पों से शराब भी तैयार करते हैं। इसके बीजों का भी महत्व कम नहीं है। वनवासी लोग इसके बीजों से प्राप्त तेलों का उपयोग घी के स्थान पर करते हैं। इसी महत्ता के कारण अंग्रेजी में इसे ''बटर ट्री'' भी कहा जाता है।

औषधीय वृक्षों में नीम के वृक्ष को प्रथम स्थान प्राप्त है। इस पेड़ की उत्पति देवताओं के अमृत से हुई है। अन्य वृक्षों की तुलना में नीम का वृक्ष सबसे अधिक ऑक्सीजन छोड़ता है और वातावरण को स्वच्छ और निर्मल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। बच्चों को होने वाले शीतला रोग में इसकी पत्तियां रामबाण औषधि के रुप में कार्य करती हैं। यही नहीं शरीर में होने वाले फोड़े-फुंसी और चर्म रोगों में इसके बीज बहुत कारगर सिद्ध हुए हैं। नीम की कोमल पत्तियों को चबाने से रक्त का शोधन होता है। इसकी कोमल शाखाओं का उपयोग लोग दातुन के रुप में भी करते हैं। इसके बीजों से प्राप्त तेलों से साबुन बनाये जाते हैं।

इसी प्रकार समुद्र के आसपास उत्पन्न होने वाले वृक्षों में नारियल, सुपारी, खजूर, पनई, ताड़ आदि प्रमुख हैं। नारियल और खजूर की पत्तियों से झाड़ू बनायी जाती है। नारियल के फल को सुखाकर इससे तेल प्राप्त किया जाता है। इसके तेल का उपयोग भोजन बनाने एवं बालों में लगाने के काम आता है।

इस प्रकार हमारे जीवन में वृक्षों का इतना अधिक महत्व है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इस सब के विपरीत हमारे बदलते परिवेश में वृक्षों का जीवन संकट में पड़ गया है। बढ़ती जनसंख्या और बढ़ते कंक्रीट के जंगलों के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। घने जंगलों को काटकर कंक्रीट के जंगल उगाये जा रहे हैं, जिसके कारण कभी सूखा तो कभी बाढ़ जैसी आपदा से हमारे विकास में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। यदि हम नहीं सुधरे तो हमारा जीवन संकट में पड़ जाएगा। वृक्ष हमारे जीवन का आधार हैं। इसका संरक्षण करना हमारा नैतिक कर्तव्य बनता है। वक्षों का महत्व हमें समझना होगा और अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना होगा, तभी हमारा पर्यावरण स्वस्थ और संतुलित हो पायेगा।

स्वस्थ-स्वास्थ्य के लिए उपयोगी-कचनार का वृक्ष।

सम्पर्क करें:
पुष्पेश कुमार पुष्प
विनीता भवन, निकट बैंक ऑफ इंडिया,
काजीचक, सवेरा सिनेमा चौक,
बाढ़-803 213 (बिहार)
मो.नं. 9135014901